मालूमाती कहानियाँ

इब्ने-फ़रीद

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

'अल्लाह के नाम से जो बड़ा दयावान अत्यन्त कृपाशील है।'

दो लफ़्ज़

बच्चे हमारा भविष्य उसी वक़्त हो सकते हैं जबकि हम उनकी तालीम ौर तरबियत पर संजीदगी के साथ ध्यान दें। इसके लिए ज़रूरी है कि म उनको वे किताबें मुहैया कराएँ जो अख़लाक़ को सामने रखकर लिखी ई हो।

यह किताब "मालूमाती कहानियाँ" जो इस समय आपके हाथों में है समें जनाब इब्ने-फ़रीद साहब ने इसी चीज़ को बच्चों के दिल और माग़ में बैठाने की एक कामयाब कोशिश की है।

सफ़ाई-सुथराई इनसान के लिए बहुत ज़रूरी है, पैग़म्बर मुहम्मद ल्ल०) ने तो सफ़ाई-सुथराई को आधा ईमान कहा है। किताब की पहली हानी "थूक का मकान" में इसी बात की अहमियत को कहानी के रेए से समझाया गया है। दूसरी कहानी "एक लाख अंडोंवाली" में खुदा ा दी हुई नेमत के बारे में बताया गया है, ताकि बच्चों के अन्दर शुक्र ा जज़्बा पैदा हो। तीसरी कहानी "बमबार चिड़िया" में बताया गया है ; खुदा ज़ुल्म और ज़ालिम को पसन्द नहीं करता, ज़ुल्म करनेवालों को ; दुनिया में भी सज़ा देता है और मरने के बाद भी उनको सज़ा देगा।

हमें उम्मीद है कि यह किताब बच्चों को पसन्द आएगी।

—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

सेक्रेट्री

इस्लामी साहित्य ट्रस्ट

(दिल्ली)

विषय सूची

थूक का मकान

टालू मियाँ! आख़िर मैंने क्या किया?
इसमें मेरी क्या ख़ता?
आपने कमरा साफ़ नहीं किया,
मैंने अपना घर बना लिया।
आप सफ़ाई करते रहते,

तो मुझे इसका मौक़ा न मिलता,
फिर मैं और ही कहीं घर बनाती।
लीजिए आइए, झाड़ू उठाइए।
तमाम कोने साफ़ कर डालिए।
पूरी छत साफ़ कर डालिए,
तमाम कूड़ा बाहर फ़ेंक आइए,
मैं जाती हूँ किसी और जगह,
कोई और कोना तलाश कर लूँगी।
जहाँ आप ही की तरह कोई और काहिल लड़क
सफ़ाई बिलकुल न करता होगा,
रहने-सहने की जगह को गन्दा रखता होगा,
वहाँ मैं पहले एक कड़ी पर चढ़ूँगी,
फिर अपने मुँह से थूक निकालूँगी,
हवा लगते ही वह, धागे की तरह,
हाँ, बिलकुल रेशम के धागे की तरह,
मज़बूत हो जाएगा । अब मैं—
उसमें लटककर झूला झूलूँगी,
फिर एक पींग इतने ज़ोर की बढ़ाऊँगी,
कि दूसरी कड़ी पर जा रहूँगी।
वहाँ फिर मुँह से थूक निकालूँगी।

वह भी हवा लगते ही सूख जाएगा,
रेशम की डोरी बन जाएगा,
फिर मैं उसमें लटक जाऊँगी,
फिर झूला झूलना शुरू करूँगी,
फिर एक ज़ोर की पींग बढ़ाऊँगी,
और तीसरी तरफ़ जा रही हूँगी,
ऐसे ही तीसरी तरफ़ डोरी बनाऊँगी,
उसमें झूला झूलूँगी,
और चौथी तरफ़ जा रहूँगी,
जब चारों तरफ़ डोरियाँ चिपका लूँगी,
खड़ी-खड़ी डोरियाँ टोकरी की तरह,
तो अब बीच में आऊँगी,
और चक्कर लगाना शुरू करूँगी,
पहले एक चक्कर लगाऊँगी,
फिर दूसरा चक्कर लगाऊँगी,
फिर तीसरा चक्कर लगाऊँगी,
फिर चौथा, पाँचवाँ, छठा, सातवाँ।
कहाँ तक गिनाऊँ, बस यूँ समझिए कि,
इतने चक्कर लगाऊँगी,
इतने चक्कर लगाऊँगी,

कि मेरा मकान तैयार हो जाएगा।
अब मैं बीचों-बीच में आकर,
अपने पूरे छः पैर फैलाकर,
आराम से बैठ जाऊँगी,
टालू मियाँ, यह मेरा थूक का घर है।
और हाँ, सिर्फ़ घर ही नहीं,
मेरा शिकार-घर भी है,
देखिए, अब मैं बीच में बैठी हूँ,
बताइए टालू मियाँ! क्या मैं दिखाई देती हूँ?
दिखाई तो देती हूँ,
लेकिन कोई क्या समझे कि मैं यहाँ हूँ,
बस इस तरह घात में बैठती हूँ,
अब मक्खियाँ आती हैं, मच्छर आते हैं,
झींगुर आते हैं, कीड़े-मकोड़े आते हैं,
सारे-के-सारे नासमझ होते हैं,
अक़्ल से काम नहीं लेते,
धोके में आ जाते हैं,
जाल में फँस जाते हैं,
मैं लपककर पहुँचती हूँ,
अपनी रेशमी डोरी से ख़ूब जकड़ देती हूँ।

आ हा हा! यानी अल्लाह मियाँ ने रिज़्क़ पहुँचा दिया,
अब जब भी भूक लगेगी,
अल्लाह का शुक्र अदा करते हुए आऊँगी,
अपना रिज़्क़ थोड़ा-थोड़ा करके खाऊँगी,
फिर मैं वहाँ अंडे दूँगी,
बहुत-से अंडे दूँगी,
इतने बहुत कि आप गिन ही न सकें।
फिर अपने थूक से एक रेशमी थैली बनाऊँगी।
हाँ, हाँ! जल्दी-जल्दी बनाऊँगी एक दम सफ़ेद!
आपके गन्दे कपड़ों की-सी नहीं,
फिर उसमें सब अंडे बन्द कर दूँगी,
जब उनमें से बच्चे निकलेंगे,
तो वे ख़ुद ही थैली काट डालेंगे,
सब दूर-दूर भाग जाएँगे।
अब वे बढ़ना शुरू होंगे।
लेकिन टालू मियाँ! वह आप जैसे नहीं होते,
वे गन्दे कपड़े नहीं पहनते,
उनको तो नया जोड़ा पसन्द है,
जब वे बढ़ते हैं तो–
उनकी खाल कस जाती है,

और फिर, आप-ही-आप चटख़ जाती हैं,
चटख़कर गिर जाती है,
अन्दर से खाल निकल आती है।
मुलायम-मुलायम, बिलकुल रेशम जैसी!
अब वे और बढ़ते हैं,
यह खाल भी सख़्त पड़ जाती है,
तंग हो जाती है।
और फिर आप-ही-आप चटख़ जाती हैं,
चटख़कर गिर जाती है,
अन्दर से खाल निकल आती है,
मुलायम-मुलायम, बिलकुल रेशम जैसी!
मगर अब वे और बढ़ते हैं,
फिर यह खाल भी सख़्त पड़ जाती है,
तंग हो जाती है,
आप-ही-आप चटख़कर गिर जाती है,
अन्दर से खाल निकल आती है,
मुलायम-मुलायम, बिलकुल रेशम जैसी!
ऐसे ही—
जब तक वे मकड़ी नहीं बन जाते,
अपनी पोशाक बदलते रहते हैं।

मगर टालू मियाँ!
हम मकड़ियों में भी एक बुराई होती है,
(मैंने ग़लत कहा। यह तो अल्लाह की मसलिहत है)
जब हम बहुत-सी एक जगह जमा हो जाती हैं,
तो एक दूसरे को खा जाती हैं,
और अगर ऐसा न होता तो–
हर तरफ़ मकड़ियाँ-ही-मकड़ियाँ होतीं,
हर तरफ़ जाले-ही-जाले होते।
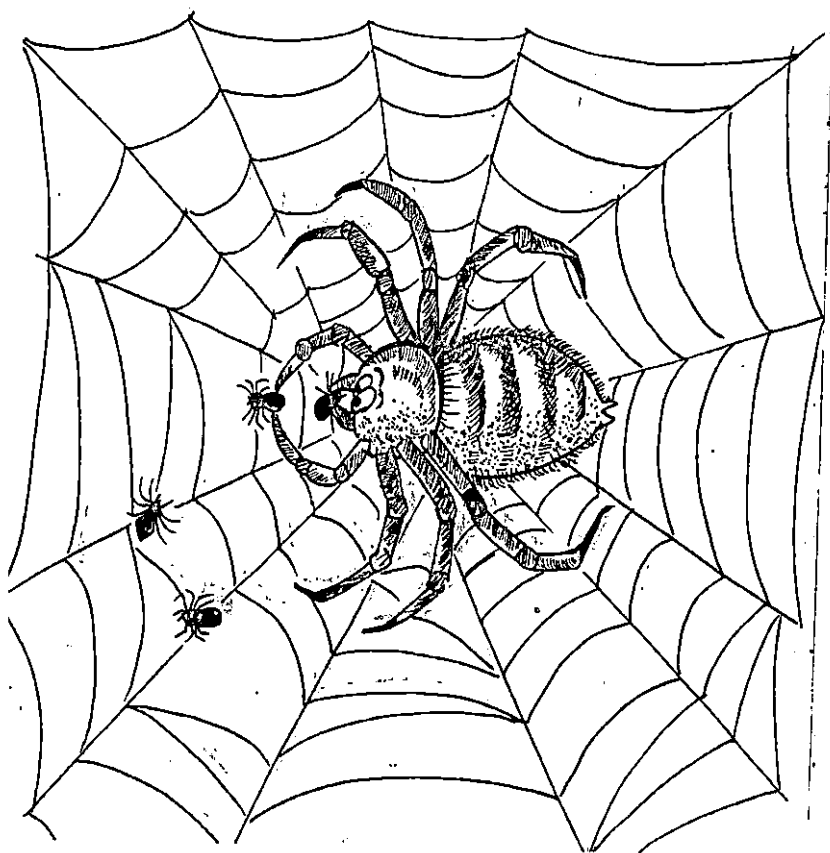
सबकी जान अज़ाब में हो जाती।
ख़ैर टालू मियाँ! अब तुम अपना काम करो।
मुझे महल तो बनाना ही नहीं, बस जाला तानना है।
कहीं भी तान लूँगी।
मेरा घर तो बहुत ही कमज़ोर और बोदा होता है।
ज़रा हाथ लगाइए और टूट गया।
तभी तो अल्लाह मियाँ उन लोगों को मुझ जैसा बताते हैं,
जो अल्लाह का मज़बूत सहारा छोड़कर,
कमज़ोरों पर भरोसा करते हैं।
उनके ये सहारे मेरे घर ही जैसे कमज़ोर तो होते हैं।
मगर हवा का इसपर कोई असर नहीं होता।
चाहे जितनी तेज़ आँधी चले, नहीं टूटता।
मेरी एक बहन तो कमाल ही करती है,
इन डोरियों से मीलों सफ़र करती है,
वह अपने थूक से तीन तागे बनाती है,
फिर उनमें लटक जाती है,
हवा उसे दूर तक उड़ा ले जाती है,
इस तरह तुम उसे मीलों दूर तक देख सकते हो।
समुन्दरों में, जहाज़ों में देख सकते हो।
अच्छा टालू मियाँ! अब देर न करो,
सफ़ाई शुरू कर दो, ख़ूब जी लगाकर,
जानते हो न, प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने कहा है—

"सफ़ाई आधा ईमान है।"
इस ईमान को हाथ से न जाने दो।
अच्छा, अब मैं जाती हूँ।
"अस्सलामु अलैकुम।"

एक लाख अंडोंवाली

बरसात का मौसम था,
तालाब पानी से लबालब भरे थे।
नदियाँ पानी से लबालब भरी थीं,
नाले पानी से लबालब भरे थे,
हर तरफ़ जल-थल था।
बड़ी मछली तालाब में तैर रही थी,
कीड़े-मकोड़ों को खा चुकी थी,
अब आराम करने जा रही थी।
इतने में –
एक तरफ़ से छोटी मछली आई,
दूसरी तरफ़ से मोटी मछली आई,
तीसरी तरफ़ से चपटी मछली आई,
चौथी तरफ़ से काली मछली आई,
पाँचवीं तरफ़ से चमकीली मछली आई,
थोड़ी देर में बहुत-सी मछलियाँ आ गईं।
सब ने बड़ी मछली से कहा –
"बी अम्माँ! अस्सलामु अलैकुम"
बड़ी मछली ने कहा –
"व अलैकुमुस्सलाम। कहो आ गईं, सब कहानी सुनने?"
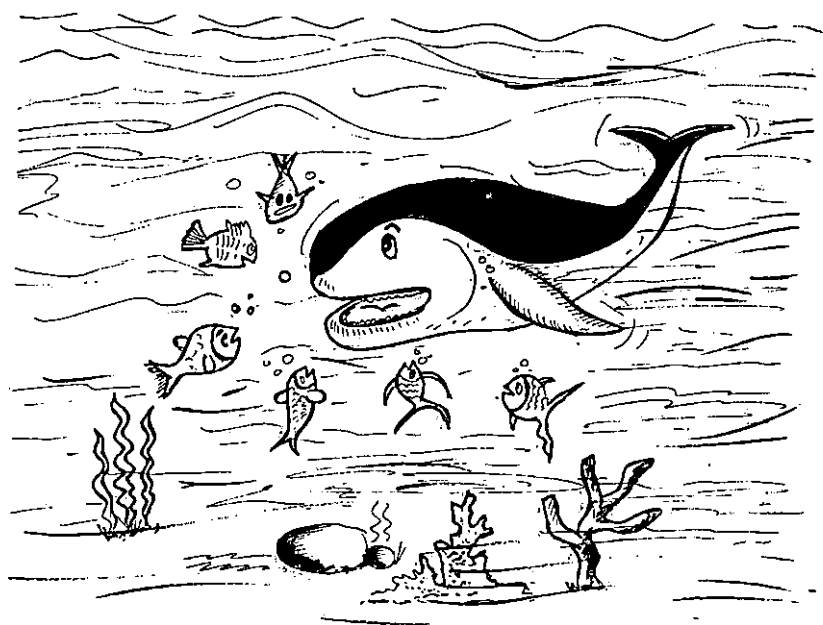
सब मछलियाँ एक साथ बोलीं –
"हाँ बी अम्माँ! सुनाइए।"
बड़ी मछली ने पहले अपनी दुम हिलाई,
फिर थोड़ा-सा पानी पिया,
अरे! यह क्या हुआ?
पानी तो गरदन के पास...
अच्छा अब समझे,
बी अम्माँ ने साँस ली थी,
वे तो पानी में साँस लेती हैं,
पहले बहुत-सा पानी पीती हैं,
फिर गलफड़ों से पानी निकाल देती हैं,
और हवा बदन के अन्दर चली जाती है।

बी अम्माँ ऐसे ही साँस लेती हैं,
सब मछलियाँ ऐसे ही साँस लेती हैं।
ऐसे साँस न लें तो –
फिर पानी में दम ही घुट जाए,
सब मर जाएँ।
हाँ, तो बी अम्माँ ने कहना शुरू किया –
"बहुत दिनों की बात है,
एक तालाब की तह में कोई चीज़ थी,
गोल-गोल छोटी-सी, जैसे टमाटर का बीज,
अरे हाँ, वह लाल भी थी,
और एक अजीब बात और भी थी।"
सब मछलियाँ एक-दम बोल उठीं –
"क्या?"
"वह चीज़ बराबर बढ़ रही थी,
जितनी बड़ी सुबह को थी,
उससे बड़ी दोपहर को हो गई,
जितनी बड़ी दोपहर को थी,
उससे बड़ी शाम को हो गई,
जितनी बड़ी शाम को थी,
उससे बड़ी रात को हो गई,
जब देखो तब पहले से बड़ी।"
"मगर वह थी क्या चीज़? बी अम्माँ!"
सब मछलियों ने एक साथ ताज्जुब से पूछा।
बी अम्माँ ने कहा – "वह अंडा था,

एक मछली का अंडा,
और एक दिन अजब बात हुई,
उसमें से एक मछली निकल आई, छोटी-सी।
फिर दूसरे अंडे में से भी,
एक मछली निकल आई, छोटी-सी।
फिर तीसरे अंडे में से भी,
एक मछली निकल आई, छोटी-सी।
फिर चौथे अंडे में भी,
एक मछली निकल आई, छोटी उतनी ही।
और यूँ ही जितने अंडे थे वहाँ,
सब में से मछलियाँ निकल आईं।
कोई इधर भागी, कोई उधर भागी।
और जो चीज़ भी दिखाई दी,
उसको खाना चाहा,
मगर खाया कुछ भी न गया,
बस जो खाया तो कीड़े-मकोड़े।
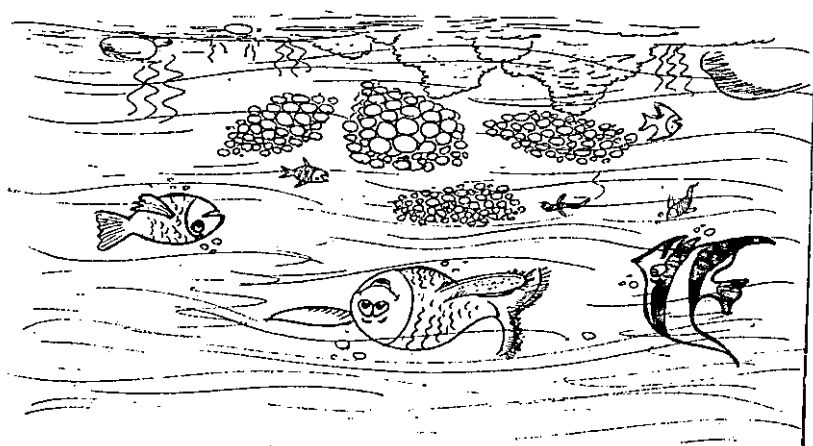
हाँ! उन्हें एक ख़ाहिश और भी थी।"
"क्या ख़ाहिश थी?" मछलियों ने पूछा।
"वे देखना चाहतीं थीं,
पानी के बाहर की दुनिया में क्या है?
एक दिन सब तैरती हुई किनारे गईं,
देखती क्या हैं, दो अजब-सी लकड़ियाँ हैं,
उनमें चार-चार शाख़ें नीचे की तरफ़ हैं,
और वे पानी में सीधी खड़ी हैं।
सबने कहा, चलो चलकर देखें,
यह क्या है? – बस वे सब चल दीं
एक मछली सबसे आगे थी,
इतने में – ग़ड़प! – अरे! – मछली ग़ायब!
भागो, भागो – यहाँ तो ख़तरा है!
सब कहती हुई भाग गईं।
मैं बताऊँ वह क्या था?"
"हाँ, हाँ, अम्माँ बी! ज़रूर बताओ।"
चपटी मछली ने कहा मगर,
दिल तो डर के मारे धड़कने लगा,
"वह सारस था।
और हाँ, ऐसे ही एक दिन,
एक मछली पानी से ऊपर तैरने लगी,
उसे एक चिड़िया झपट्टा मारकर ले गई,
एक और मछली किनारे गई,

उसे बगुला चट कर गया।
एक और मछली किनारे गई,
उसे ऊदबिलाव खा गया।
रोज़ एक-न-एक मछली मारी जाती।
जब मछलियाँ थोड़ी और बड़ी हुईं तो—
उन्होंने सोचा, चलो गहराई में चलें,
वहाँ खाना ज़्यादा मिलेगा,
वहाँ बड़ी मछलियाँ मज़ा करती हैं।
सबने कहा, ठीक तो है।
जैसे ही वे गहराई में गईं,
एक छोटी मछली को बड़ी मछली हड़प कर गई,
अब तो फिर डर के मारे,
सब उलटे पाँव भागीं।"
"पाँव क्या होते हैं?"
काली मछली ने पूछा।
बड़ी मछली ने कहा, "ये मछलियों के नहीं होते, सारस,
बगुले, आदमी वग़ैरा के होते हैं।
अब न वे किनारे जातीं,
न गहराई में जातीं।
बस बड़ी होशियारी से बच-बचकर रहतीं।
मगर अब उनका दिल घबराने लगा,
अब वे कुछ और बड़ी हो गईं थीं।
तालाब में रहते-रहते उकता गईं थीं,

सबने एक दिन मशवरा किया।
और नाले के रास्ते चल दीं।
चलते-चलते दरिया में पहुँचीं,
ताज़ा, बहता हुआ पानी मिला,
उम्दा काई मिली,
तरह-तरह के उम्दा खाने मिले,
फिर क्या था, जल्दी ही बड़ी हो गईं,
अच्छी-ख़ासी बड़ी-बड़ी मछलियाँ हो गईं,
मगर जान का ख़तरा अब भी था,
कभी घड़ियाल, मगरमच्छ खा जाते,
कभी आदमी आते, जाल डालते,
और ढेरों मछलियाँ पकड़ ले जाते।
ग़रज़, लाखों में कुछ सौ रह गईं।"
"जच, जच! आख़िर ऐसा क्यों होता है?
अल्लाह मियाँ सबको ज़िन्दा क्यों नहीं रखते?"
काली मछली ने पूछा – बी अम्माँ ने कहा, "फिर
बड़ा ग़ज़ब हो जाए,
सिर्फ़ कुछ सालों में, पानी में जगह न बचे।
तुम्हारे लिए तैरने की जगह भी न रह जाए,
सबका दम घुट जाए और मर जाएँ।
अल्लाह तआला की मसलिहत निराली होती है।"
अब मोटी मछली बोल उठी, "बी अम्माँ!
यह आदमी बड़ा बुरा होता है – एक दम, इतनी ब

सारी मछलियाँ पकड़ ले जाता है।"
"नहीं ऐसा न कहो।" बी अम्माँ ने कहा –
"अल्लाह मियाँ ने हमको बनाया ही इसलिए है कि जब वह पानी में आए,
तो वहाँ भी अपने लिए रिज़्क़ पाए।
हमको अपनी गिज़ा बनाकर खाए,
आख़िर हम भी तो ऐसा ही करते हैं।
दूसरे जानदारों को खाते हैं।"
अब चमकीली मछली ने पूछा –
"अच्छा यह तो बताइए बी अम्माँ!
आपने बड़ी मछली तो देखी होगी,
कितनी बड़ी होती है, सबसे बड़ी मछली?"
बी अम्माँ ने कहा –
"वह तो बहुत ही बड़ी होती हैं,
इतनी बड़ी कि इस तालाब में न आ सकें।
ऐसी मछलियाँ जहाज़ों को उलट देती हैं,
तब-ही से भारी-भारी जहाज़ बनाए गए।
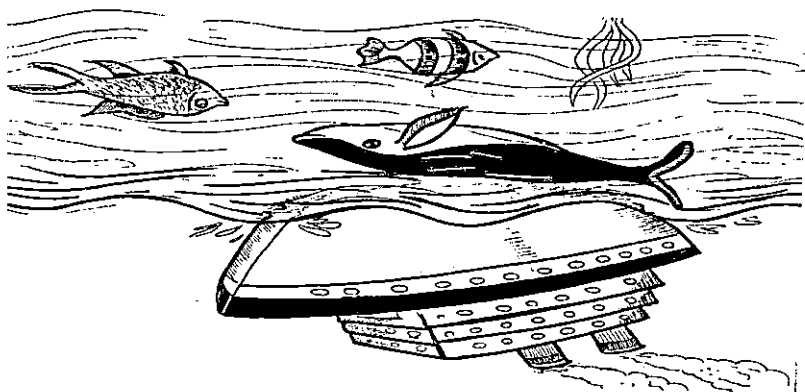
लो, अब एक दिलचस्प वाक़िआ सुनो –
अल्लाह मियाँ के एक नबी थे,
हज़रत यूनुस (अलैहिस्सलाम) उनका नाम था।
अल्लाह मियाँ ने उनकी आज़माइश की,
चालीस दिन मछली के पेट में रखा,
फिर जब अल्लाह मियाँ ने दोबारा हुक्म दिया,
तो उस मछली ने उन्हें सूखी जगह पर उगल दिया,
इस तरह अल्लाह मियाँ ने उन्हें सिखाया –
मुसीबत में सब्र व शुक्र कैसे करते हैं,
इसी लिए उसने ऐसा किया –
हाँ, तो एक बार दरिया में सैलाब आया,
अब वे मछलियाँ भी ख़ूब बड़ी हो चुकीं थीं,
उनमें से एक पानी में बहती-बहाती निकली।
न मालूम क्या तलाश करने निकली,
चलते-चलते कई मील दूर निकल गई।
एक तालाब में पहुँच गई,
वहाँ उसने अंडे दिए।
पानी में बड़ी महफ़ूज़ जगह अंडे दिए।
बताओ कितने होंगे सब अंडे?"
बी अम्माँ ने पूछा। छोटी मछली बोली–
"दस-बीस होंगे सब!"
बी अम्माँ हँसीं, हँसकर बोलीं –
"मछली एक लाख के क़रीब अंडे देती है,

हाँ! फिर अंडे देकर जब चलने लगी,
तो उसको छोटी-छोटी मछलियाँ नज़र आईं,
उसके मुँह में पानी भर आया,
उसने लपककर एक मछली पकड़ ली,
देखो ऐसे।"
बी अम्माँ ने यह कहा,
एक छोटी मछली को हड़प कर गईं,
बाक़ी मछलियाँ तित्तर-बित्तर हो गईं,
अपनी जान बचाकर भाग गईं।
"अरे वाह! ख़ूब!
यह तो बी अम्माँ अपनी ही कहानी कह रही थीं।
ये अंडे देने वहीं तो आई थीं।"

बमबार चिड़िया

"हाँय, हाँय नन्हे मियाँ हाँय!
चूँ, चूँ!
मेरा घर न बरबाद करो।
मैंने बड़ी मुश्किल से बनाया है।
तालाब के किनारे से,
नदी के किनारे से,
कुँए के किनारे से,
गीली मिट्टी चोंच में भरकर लाई हूँ।
फिर उसे छत की कड़ियों में चिपकाया है।
फिर और लाई हूँ,
फिर पर, तिनके और चीथड़े लाई हूँ,
मिट्टी से उन सबको चिपकाया है,
तब कहीं जाकर यह घर बना है।
और तुम ज़ुल्म कर रहे हो,
गुल्ला मारकर तोड़े डाल रहे हो।
चूँ, चूँ! न, न, ऐसा न करो!
वरना फिर मैं कहाँ रहूँगी?"
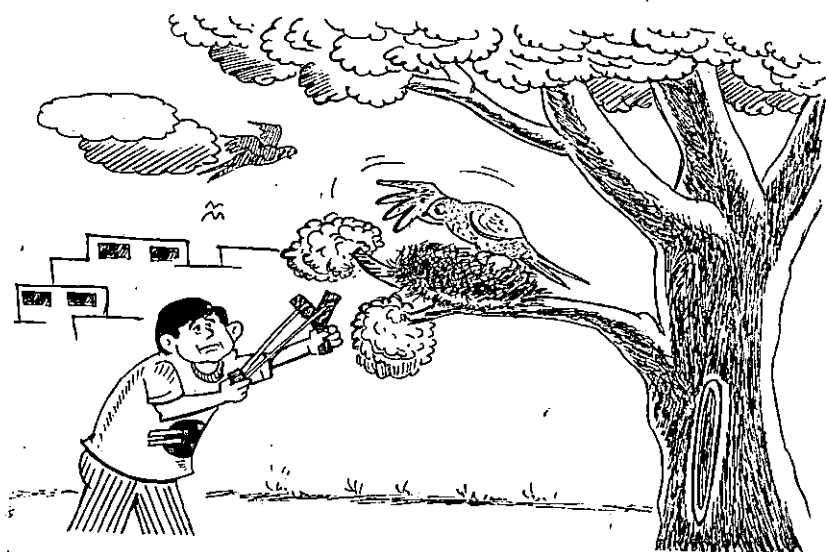
नन्हे मियाँ ने गुलेल जेब में रख ली। और बोले–
"तुम तिनके और पर क्यों चिपकाती हो?
पूरा घर मिट्टी से क्यों नहीं बनाती?"
चिड़िया बोली, "चूँ, चूँ, वाह नन्हे मियाँ!
तुमको इतना भी नहीं मालूम।
अकेली मिट्टी किस काम की होती है।
वह तो सूखने पर चटख़ जाती है,
इसी लिए पर और तिनके लगाती हूँ,
ताकि घोंसला चटख़कर टूट न जाए।"
चिड़िया चुप हो गई तो नन्हे मियाँ जाने लगे।
नन्हे मियाँ को जाते देखकर चिड़िया ने पुकारा–
"कहाँ चले नन्हे मियाँ?"
एक ख़ुशख़बरी तो सुनते जाओ –
"थोड़े ही दिनों में तुम देखना,

मेरे यहाँ बच्चे आनेवाले हैं।
दो नन्हे-नन्हे बच्चे,
उनको तुम अपना दोस्त बनाना,
हम उनको दाना चुगाएँगे।"
नन्हें मियाँ ने कहा, "और दूध भी पिलाओगी?"
चिड़िया हँसी, "चूँ, चूँ,
जो अंडे देते हैं, वे दूध नहीं देते,
जो दूध नहीं देते, वे चारा खिलाते हैं,
अच्छा बताओ तो, क्या तुम जानते नहीं,
अंडे देनेवाले कौन हैं, और बच्चे देनेवाले कौन हैं?
दोनों में फ़र्क़ क्या है?"
नन्हे मियाँ ने जवाब दिया –
"अंडे देनेवालों के पर होते हैं।"
चिड़िया हँसी, "चूँ, चूँ, चूँ,
मछली के पर कहाँ होते हैं?
साँप के पर कहाँ होते हैं?
चींटी के पर कहाँ होते हैं?
नन्हे मियाँ अब तो सोच में पड़ गए।
फिर कुछ सोचकर बोले –
"उनके अगले बाजू नहीं होते हैं।"
चिड़िया हँसी – "चूँ, चूँ, चूँ।
छिपकली के तो अगले बाजू होते हैं,
मगरमच्छ के भी अगले बाजू होते हैं,

कबूतर के भी अगले बाज़ू होते हैं,
मेरे भी अगले बाज़ू हैं, यह देखो,
इनमें पर लगे हुए हैं।
मैं इनसे उड़ती हूँ।''
चिड़िया ने अपने बाज़ू फैलाकर दिखा दिए।
अब तो नन्हे मियाँ सोच में पड़ गए।
''अच्छा तुम्हीं बताओ!''
''लो सुनो'' चिड़िया बोली –
जिनके कान बाहर को निकले होते हैं,
वे अंडे नहीं देते,
जैसे इनसानों के होते हैं,
जैसे गाय के होते हैं,
जैसे भैंस के होते हैं,
लेकिन! जिनके कान बाहर निकले हुए नहीं होते,
वे अंडे देते हैं,
जैसे छिपकली के नहीं होते,
जैसे मुर्ग़ी के नहीं होते,
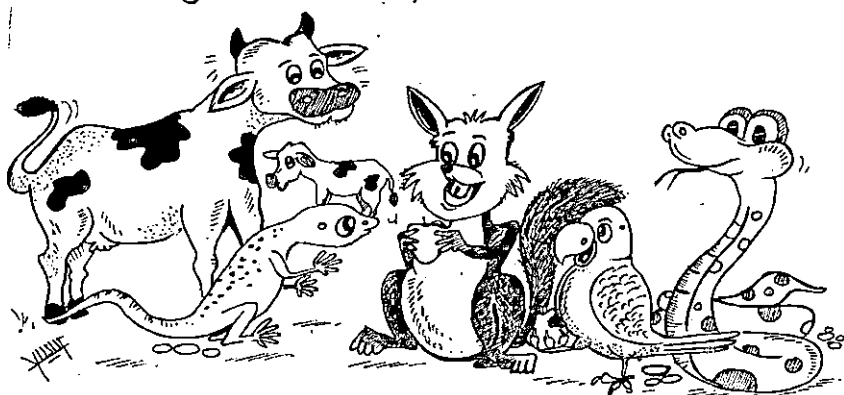
जैसे तोते के नहीं होते,
और देखो, जैसे मेरे नहीं हैं।
हाँ, तो आज से दो हफ़्ते हुए,
मैंने दो अंडे दिए थे।
एक दिन एक, दूसरे दिन दूसरा।
फिर हमने उनको सेना शुरू किया।
कभी मैं अंडे पर बैठती और चिड़ा चुगने जाता,
कभी मैं चुगने जाती और चिड़ा अंडे पर बैठता,
अब जब बच्चे निकल आएँगे,
तो हम दोनों बारी-बारी जाएँगे,
दाना लाकर उनको चुगाएँगे,
मगर जब वह बड़े हो जाएँगे,
तो हम उनको जुदा कर देंगे।
वे अपना घर अलग बनाएँगे।"
"तो तुम घर बनाना भी तो सिखा दोगी ना?"
नन्हे मियाँ ने चिड़िया से पूछा,
चिड़िया हँसी, "चूँ, चूँ चूँ, हम आदमी नहीं हैं,
हम चिड़िया हैं,
यह काम हम एक-दूसरे को नहीं सिखाते।
अल्लाह मियाँ ख़ुद सिखा देते हैं।"
अचानक नन्हे मियाँ ने पूछा, "अरे हाँ!
तुम्हारा नाम अबाबील ही तो है ना?"
"हाँ, लोग बमबार चिड़िया भी कहते हैं" चिड़िया ने

कहा,
मगर नन्हे मियाँ न समझे, बोले –
"अब्बा जान ने तो बताया था,
बम हवाई जहाज़ से गिराए जाते हैं,
जिस जगह बम गिरता है, वह जगह तबाह हो जाती है,
सब मकान वग़ैरा खण्डर हो जाते हैं"
"फिर तुम कैसे बम गिरानेवाली बन गई?"
चिड़िया ज़रा फुदकी, फिर अपने पर फड़फड़ाए।
फिर बोली, "तुम्हारे अब्बा ने ठीक कहा,
बम हवाई जहाज़ से गिराए जाते हैं,
यह ज़ालिम और बुरे लोग गिराते हैं,
ये उसे ख़ुदा के हुक्म के ख़िलाफ़ गिराते हैं,
ख़ुदा के बन्दों को सताने के लिए गिराते हैं,
बेगुनाहों की जानें लेते हैं,
बच्चों की, बूढ़ों की, औरतों की!
मगर बमबार चिड़ियों ने ऐसा नहीं किया,
उसने तो अल्लाह मियाँ के हुक्म से बमबारी की।
उसका कहना न माननेवालों पर बमबारी की,
ज़ालिमों पर बमबारी की, उनकी जानें हलाक कीं।"
नन्हे मियाँ ने बेचैन होकर पूछा –
"ज़रा हमको भी तो बाताओ कैसे?"
चिड़िया ने पूछा, "काबा को तुम जानते हो?"
नन्हे मियाँ ने जवाब दिया – "हाँ!

हम उधर मुँह करके नमाज़ पढ़ते हैं,
वह प्यारे नबी (सल्ल॰) के देश, अरब में है।"
चिड़िया बोली, "हाँ, हाँ, वही!
जब प्यारे नबी (सल्ल॰) पैदा नहीं हुए थे।
उनके दादा काबा के निगहबान थे,
अब्दुल-मुत्तलिब उनका नाम था।
उन्हीं के ज़माने का वाक़िआ है,
यमन के बादशाह ने काबा पर हमला कर दिया,
उसका नाम अब्रहा था।
वह काबा को ख़त्म कर देना चाहता था,
उसको तोड़-फोड़ डालना चाहता था,
उसकी जगह अपना इबादत-घर बनाना चाहता था,
उसके पास बहुत बड़ी फ़ौज थी,
भारी भरकम हाथियों की फ़ौज!
बस फिर क्या था,
जब उसने काबा पर चढ़ाई कर दी,
लोग इतनी बड़ी फ़ौज देखकर डर गए,
डरकर काबा छोड़कर भाग गए,
अब्दुल-मुत्तलिब अकेले रह गए,
उन्होंने अल्लाह मियाँ से दुआ की,
अल्लाह! अब तू ही अपना घर बचा;
काबा की हिफ़ाज़त कर।"
अल्लाह मियाँ ने उनकी दुआ सुन ली,

बमबार चिड़ियों की बहुत ही बड़ी फ़ौज भेजी,
आसमान पर अँधेरा छा गया,
चिड़ियों की चोंच में कंकड़ियाँ थीं,
बस वे फ़ौज पर कंकड़ियाँ गिराने लगीं,
जिसके कंकड़ी लगती, वह ढेर हो जाता,
कंकड़ियाँ बन्दूक़ के छर्रे की तरह लगतीं,
इतनी ऊँचाई से जो गिरती थीं!
पूरी फ़ौज वहीं ख़त्म हो गई,
सब सिपाही मर गए, सब हाथी मर गए,
और सबका सरदार अब्रहा भी मर गया।
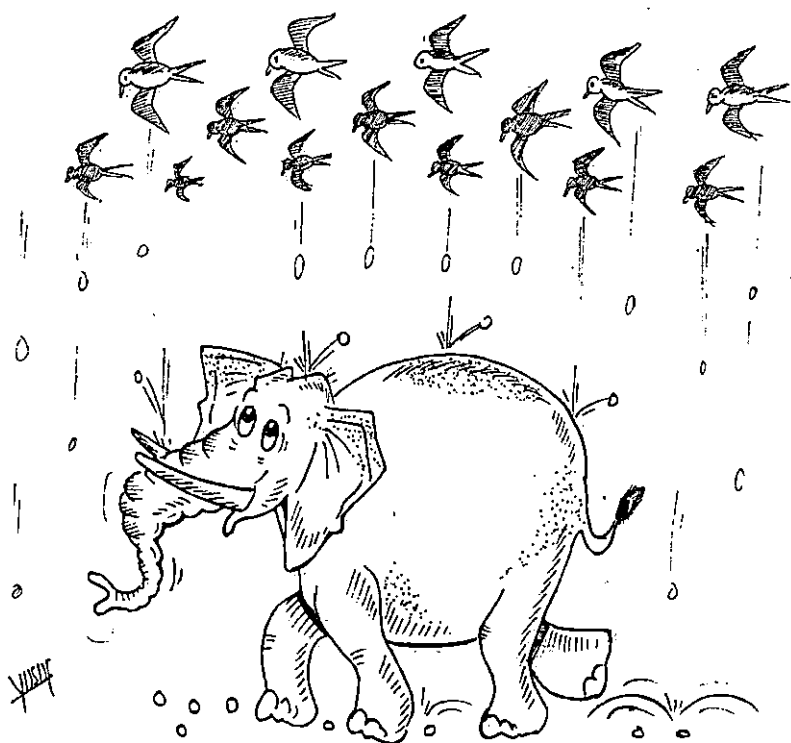
अल्लाह ने अपना घर बचा लिया,
दुश्मनों को तबाह कर दिया,
नन्हें मियाँ एक दिलचस्प बात और भी है,
बमबारी दरअस्ल हमने नहीं की,
वह तो चिड़ियों का एक झुंड था,
लेकिन मेरे नाम से लोग धोखा खा जाते हैं,
मुझ ही को बमबार चिड़िया समझते हैं।
फिर भी, वे चिड़ियाँ ही तो थीं,
हम ही में से,
हमारी तरह अल्लाह मियाँ का हुक्म माननेवाली।"
इतने में चिड़ा आ गया,
और चिड़िया दाना चुगने चली गई।